सक्सेस एंड एबिलिटी

Success & ABILITY

विकलांगों के प्रतिभा की दिशा में

मार्च 2018

CAVINKARE ABILITY AWARDS 2018

मास्टरी

विशेष मान्यता

एमनेस्टी

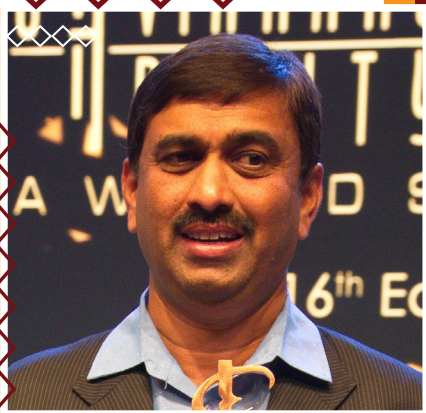

संपादकीय नज़र

दोस्तों

मैं यह संपादकीय लेख एक संपादक के नज़रिये से नहीं, बल्कि विकलांगता क्षेत्र में सहयोगी और मेरे एक दोस्त को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए लिख रही हूँ। मुझे यह कबूल करना होगा कि मुझे इस बार संपादकीय लेख लिखना मुश्किल लगा। कई विचारें और यादें मन में आ रहे हैं। सदमे की स्थिति में कोई कहाँ से और कैसे लिखना शुरू करता है?मैं खाली पृष्ठ को घूर रही हूँ, यह जानकर कि मुझे उनके बारे में लिखना चाहिए, फिर भी ऐसा करने में असमर्थ हूँ । मैं सिर्फ यह देख रही हूँ - जैसे कि उनका एक तस्वीर मेरे सामने हो-उनकी प्रश्नों से भरे दृष्टि और मुस्कान का एक झिलमिलाहट और वो अनकहे शब्द जो बताती है कि हमारे विचार एक समान है।हाँ, मैं जावेद आबिदी, कार्यकारी निदेशक, एनसीईपीडीपी और डिसेबल्ड पर्सन्स इंटरनेशनल के पूर्व अध्यक्ष के बारे में बात कर रही हूँ ।

जावेद ... हाल के दिनों में आपके बारे में बहुत बात-चीत हुआ है और बहुतकुछ लिखा गया है।आपके बारे मेंप्रशंसा और प्रार्थना के शब्द, निजी अनुभवों के उद्धरण और कुछ यह बताते हैं की आप कितने दृढ़,दयालु और दूरदर्शी थे।इतना अधिक, और इतना अंतहीन कि मैंने चुप रहने का फैसला किया ... और हमारे बीच के सहयोग के बारे में सोचने लगी (शायद 1996 का समय था) जब हम डीआरजी और डीपीआई के बारे में विचार कर रहे थे। जब से हम मिले हम मित्र बन गए। 1997 में हमारे समावेशी फैशन शो "समारा", जिसमें ऐश्वर्या राय भाग ले रही थी, आपने भी भाग लिया !ओह ... बेशक आप उसके साथ कैटवॉक करना चाहते थे, पर इस शो को संगठित कर रहे कोरियोग्राफर के कारण ऐसा नहीं हुआ ! काश मैं अपने मन में घटनाओं को अनुक्रमित कर पाती ... हमारे लाओस और वीएनटीएनए के यात्रा - आप, डॉ. श्रुति मोहापात्रा और मैं...काम और मज़ेदार संयोजन का आयोजन ऐसे कई अन्य यादें जिसे मिटाया नहीं जा सकता। कुछ मीठे, कुछ खट्टे लेकिन सभी अविस्मरणीय।

मुझे लगता है कि विकलांगता के दृश्य को हम इस पृष्ठ के उद्देश्य के लिए 3 चरणों में विभाजित कर सकते हैं: (ए) पहला चरण, 1996 के पूर्व, जब कुछ भी नहीं हो रहा था ... विकलांग लोग : वैसे भी वे कौन हैं, बधिरों और अंधों के स्कूलों में जाते थे, स्पास्टिक सोसाइटी, मानसिक बीमारी वाले बच्चों का स्कूल इत्यादि। (बी) 1997 से 2007 तक के दूसरे चरण में हम दुर्जेय जंगल में एक पथ की एक झलक बनाने में कामियाब हुए; जब भारत की 2001 जनसंख्या जनगणना में विकलांगता पर 2 प्रश्न शामिल किया गया; और जब 2007 में, भारत ने यू.एन.सी.आर.पी.डी की पुष्टि की! हुर्रे! ओह, हम कितने खुश थे! आखिरकार हम आ ही गए! (सी) और अंत में 2007 से 2017 तक का चरण जब बहुत कुछ हुआ और नहीं भी हुआ। लेकिन कम से कम पूर्व का पथ ठोस सड़क में परिवर्तित हुआ- यद्यपि यह एक पत्थरों से भरा कच्चा सड़क था, फिर भी एक सड़क! और अब, कई उज्ज्वल और सक्षम कार्यकर्ता इस क्षेत्र में प्रवेश कर चुके हैं ... हमारे दिलों को प्रसन्न करते हुए ... और जावेद , आपने अपना कर्तव्य कर दिया और कल के अधिवक्ताओं और प्रचारकों को विरासत सौंप दी, और सबको अलविदा कह दिया।और जैसे श्रुति मोहापात्रा ने कहा:"एक असली कर्म योगी," जीवन के आखिरी क्षण तक सक्रिय। जावेद आबिदी ... हमें आप जैसे और लोगों की जरूरत है।

जयश्री रवींद्रन

समाचार और विचार साझा करने के लिए, हमें इस इ-मेल पर लिखें magazine@abilityfoundation.org

संपादक जयश्री रवींद्रन

प्रबंध संपादक जानकी पिल्लई

उप संपादक हेमा विजय

सह संपादक सुचित्रा अय्यप्पा

क्रिएटिव डिज़ाइनर मेरी पर्लिन

हिंदी अनुवादन मालिनी. क

संवाददाता

अनंतनाग: जावेद अहमद तक +911936 211363
हैदराबाद साई प्रसाद विश्वनाथ 91810685503
भोपाल : अनिल मुद्गल+91755 2589168
भुवनेश्वरडॉ. श्रुति मोहपात्रा +91 6742313311
दुर्गापुरअग्शु जाजोडिया +919775876431
गुरुग्राम :सिद्धार्थ तनेजा +919654329466
पुणे : साज़ अगरवाल+919823144189 संदीप कनाबार +919790924905
बेंगलोर : गायत्री किरण +919844525045 अली ख्वाजा+9180 23330200
नई दिल्ली अभिलाशा ओझा +919810557946
यु.इस. ऐ डॉ. मदन वसिष्टा +1(443)764-9006

प्रकाशक : एबिलिटी फाउंडेशन संपादकीय कार्यालय : नया न. 23, 3rd क्रॉस स्ट्रीट, राधाकृष्णन नगर, तिरुवान्मयूर, चेन्नई , इंडिया फ़ोन/फैक्स : 91 44 2452 0016 / 2440 1303. इ- मेल: magazine@abilityfoundation.org. ऐबिलिटी फाउंडेशन की ओर से जयश्री रवींद्रन द्वारा प्रकाशित, 27, 4th मेइन रोड, गाँधी नगर, चेन्नई 600 020. फ़ोन: 91 44 2452 0016. वेब साइट: www.abilityfoundation.org

Rights and permissions: No part of this work may be reproduced or transmitted in any form or by any means, without the prior written permission of Ability Foundation. Ability Foundation reserves the right to make any changes or corrections without changing the meaning, to submitted articles, as it sees fit and in order to uphold the standard of the magazine. The views expressed are, however, solely those of the authors.

एक यादगार शाम

16 वें कैविनकर एबिलिटी अवार्ड्स की रात प्रेरणादायक और भावात्मक क्षणों का मिश्रण था, जिसने कई लोगों को भावुक बना दिया और बहुत लोगों को अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित किया। श्रुति.स.राघवन लिखती है

श्रुति. एस. राघवन

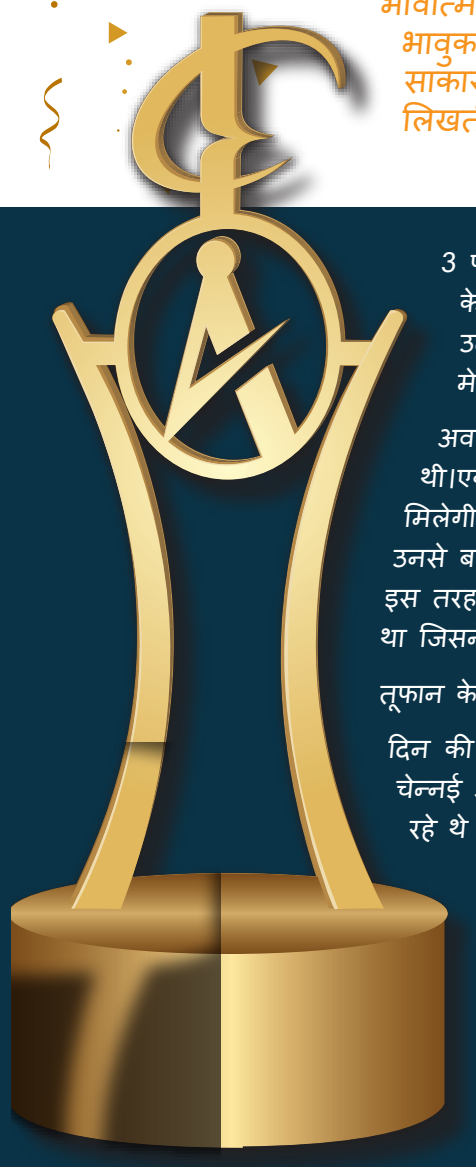

3 फरवरी 2018 को आयोजित 16 वें केविन केअर एबिलिटी अवॉर्ड को वर्णित करने के लिए यह चार शब्द काफी हैं - उत्साह, स्नेह,हँसी,हर्षोत्साह।छह विकलांग लोगों के उत्कृष्ट सफलता का जश्न मनाने के लिए एक भरपूर सभा को जीवित उठते देखना मेरे लिए पहला अनुभव था।

अवार्ड्स के तीन दिन पहले ही मैं एबिलिटी फाउंडेशन में स्वयंसेवक के रूप में जुडी थी।एक पुरस्कृत और प्रेरणादायक यात्रा के लिए इससे बेहतर शुरुआत मुझे शायद नहीं मिलेगी।कई स्तरों पर मेरा यह पहला अनुभव था: विकलांग व्यक्तियों से मिलना और उनसे बातचीत करना, ऐसे समारोह के पीछे जो लोग काम कर रहे थे उनसे मिलना और इस तरह के बड़े पैमाने के एक समारोह में भाग लेना।दिन के अंत में यह पहला समारोह था जिसने मुझे प्रेरित, मंत्रमुग्ध और अवाक कर दिया।

तूफान के पहले की खामोशी

दिन की शुरुआत से ही एबिलिटी टीम छह प्राप्तकर्ताओं , जो देश के विभिन्न भाग से चेन्नई आये थे, को स्वागत करने में लगे हुए थे।इनमे से कई पहली बार चेन्नई को आ रहे थे , जबकि अन्य लोग के लिए यह उनके पिछले यात्राओं के खूबसूरत यादों को ताज़ा करना था। प्राप्तकर्ताओं के लिए सुबह में संगठित स्वागत सत्र ने सुनिश्चित किया कि हम में से हर कोई शाम के समारोह के लिए तैयार हो।यह मेरे और मेरे जैसे एबिलिटी दल के नए सदस्यों के लिए विशेष रूप से उपयोगी था। टीम के सदस्यों को सिर्फ यह बताया गया था कि यह सुनिश्चित करना होगा की प्राप्तकर्ताओं के लिए यह शाम यादगार बन जाये, और टीम ने ऐसा ही किया।कार्यक्रम स्थल में इतना सकारात्मकता, उत्साह और जोश था कि प्राप्तकर्ताओं और एबिलिटी फाउंडेशन के नए सदस्यों के बीच घबराहट का कोई नामोनिशान ही नहीं था!

आवरण कथा

भरपूर उत्सव

भव्य पुष्प पृष्ठभूमि में इस खूबसूरत शाम की शुरूआत सुप्रसिद्ध गायिका अनुराधा श्रीराम के सुखदायक गायन ' शांती निलव वेंडुम' (शांति अमन हो) से हुई।क्षमता और मानवता पर ब्लासे के रैप ने इस रंगीन मंच के कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। उन्होंने खुद सांकेतिक भाषा का उपयोग करके व्याख्या भी की।सांकेतिक भाषा सीखने और अभ्यास करने की उनकी कई घंटों की मेहनत न केवल उनके त्रुटिहीन गायन में बल्कि प्रत्येक दर्शक को अपने संगीत में समावेश करने के उनके प्रतिबद्धता में परिलक्षित था।

विनीत

अपने स्वागत भाषण में कैविन केयर के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक सी.के.रांगनातन ने कहा, "एबिलिटी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में मजबूत इच्छाशक्ति और आत्मभल के साथ आगे बढ़ रहा है।"अपने 16 साल की यात्रा को पीछे मुड़कर देखते हुए एबिलिटी फाउंडेशन के संस्थापक निदेशक जयश्री रवींद्रन ने भविष्य में विकलांगों के समावेशन और समान अवसरों के प्राप्ति पर उत्साह और उमंग व्यक्त किया।

शाम का पहला पुरस्कार - विशेष मान्यता पुरस्कार- ओडिशा के डॉ. श्रुति मोहापात्रा को दिया गया। कोई उनके संक्रामक मुस्कान को अनदेखी नहीं कर सकता और उनकी आँखों में उत्साह स्पष्ट था।स्वाभिमान के संस्थापक और सी.ई.ओ, विकलांगता सूचना और संसाधन केंद्र, डॉ. मोहापात्रा एक क्वाड्रिप्लेजिक है जो एक समावेशित दुनिया खायम करने के अपने प्रयास में अडिग हैं।

अनुराधा श्रीराम

इसके बाद प्रशंसित अभिनेता / नर्तक विनीत का 'कर्मा' और 'लाइफ ऑफ़ इग्नोरेंस' पर दिव्य और सुंदर नृत्य प्रदर्शन था जो उस शाम के थीम का पूरक था। विनीत कई वर्षों से एबिलिटी फाउंडेशन के साथ जुड़े हुए हैं और अपने संबोधन में उन्होंने भविष्य में भी इस संबंध को आगे बढ़ाने की उम्मीद की।

अगले चार पुरस्कार, 'द मास्टरी अवार्ड्स ' उन विकलांग व्यक्तियों को प्रदान किए गए थे जिन्होंने सभी बाधाओं के

खड़े बाएं से दाएं : ईश्वर अचंता, आंडाल दामोदरन, आ. श्रीकांत, विनोद सुराणा, बी. श्रीनिवासन, सी.के. रंगनातन, जयश्री रवींद्रन, मरीयज़ीना जॉनसन
बैठे बाएं से दाएं : डॉ. रोशन जवाद शेख, गौरी शेखर गाडगील, जस्मिना खन्ना, डॉ. श्रुति मोहापात्रा, महंतेश जी.के, राजू रामेश्वर उप्राडे

उनकी दृढ़ निश्चय, जीवन के लिए उत्साह या अपने सपनों को हासिल करने का जूनून? 16 की सी.के.ए अवॉर्ड्स रात का अंग होने के कारण मुझे जवाब मिला, कि यह उनका दृश्टिकोंण है जो असामान्य को सामान्य के रूप में देखते है असंभव को संभव करते हैं और हर बार जब कोई उन्हें कहता है की वे कुछ काम नहीं कर सकते वे उस काम को काम कर दिखते हैं।

बावजूद अपने सपनों को साकार किया। इस वर्ष मास्टरी अवार्ड्स के प्राप्तकर्ता, पुणे के राजू रामेश्वर उप्राडे और गौरी शेखर गाडगील, मुंबई के जस्मिना खन्ना और डॉ.रोशन जावद शेख थे।उनकी विकलांगता नहीं बल्कि उनका सपने देखने का, उसपर दृढ़ रहने का और उन सपनों को साकर करने का साहस उन्हें अन्यकिसी भी विजेताओं से अलग दिखाता है।

जन्मजात ऐकोंड्रोप्लासीया के कारण भले ही राजू का कद कम हो, सकता है, लेकिन इस विश्व के अधिकांश लोगों की तुलना में उनका साहस और सपने बहुत ऊँचा हैं।ऐकोंड्रोप्लासीया की विभिन्न जटिलताओं को स्वीकार करने के साथ ही उन्हें इसके साथ जुड़े शारीरिक दर्द, वित्तीय बाधाओं और अस्वीकृति का सामना करना पड़ा, जो किसी अज्ञान मन को भी जागृत कर सकता हैं।इस पुरस्कार को उन्होंने अपने माँ को समर्पित किया। उन्होंने बताया कि कैसे उनके माँ ने उनके जीवन के अंधेरे समय में उनकी साहस बढ़ाया और जीवन से संगर्ष करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया।

डाउन सिंड्रोम के बावजूद गौरी शेखर गाडगील ने जीवन में उत्साह नहीं खोया। उसने अपने जीवन का अर्थ अप्रत्याशित जगह में पाया- अपने चिकित्सा के दौरान। उपचार के रूप में गौरी को तैराकी और नृत्य सुझाया गया, जिसका, गौरी इतना आनंद लेने लगी कि इसमें उसने कई राष्ट्रीय स्तर और विशेष ओलंपिक पदक जीती।वह एक प्रशिक्षित भरतनाट्यम नर्तक और एक समाजशास्त्र स्नातक भी है।

जस्मिना खन्ना की उत्साही मुस्कुराहट को कोई भूल नहीं पायेगा। सेरेब्रल पाल्सी ने जस्मिना को भरपूर जिंदगी जीने से नहीं रोका, और उसकी मुस्कुराहट अंधेरा कमरे को भी प्रकाशमय बना देता है, क्योंकि वह हंस की लावण्यता से बाधाओं को पार करती है।राजनीति विज्ञान में स्नातक की डिग्री और समाजशास्त्र में मास्टर की डिग्री के साथ, जस्मिना एक सॉफ्टवेयर पेशेवर भी है और एक अग्रणी आईटी कंपनी के साथ काम करती है, साथ ही वह लिकने की अपनी जुनून का भी पोषण करती है।

डॉ. रोशन जवाद शेख लावण्यता और सुंदरता के प्रतीक

है। उसकी आंखों में सह मनुष्य के लिए सहानुभूति और करुणा दीखती है, जो समाज को प्रभावित करने वाले एक डॉक्टर के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।बाकी लोगों की तरह, मुझे यह जानकर हैरानी हुई कि एक भयंकर ट्रेन दुर्घटना के परिणामस्वरूप उसके दोने पैरों का विच्छेदन हुआ है। लेकिन उसने अपने विकलांगता के बावजूद एम.बी.बी.एस परीक्षा में डिस्टिंक्शन के साथ उत्तीर्ण हुई और भविष्य में सर्जन बनना चाहती है।शाम का मुख्य आकर्षण डॉ. रोशन का अपने माँ पर लिखा शायरी (उरुदु कविता) था, जिसे सुनकर, वहां पर उपस्तिथ सभी लोगें के आंखें में आंसू निकली और उन्हें पूरे सभा की तालियां मिली।

शाम का आखिरी पुरस्कार, 'अवार्ड फॉर ऐम्मिनेन्स' एक परिवर्तनकारी नेता, महंतेश जी.के को दिया गया।अपने स्वयंसेवी संगठन समर्थनम के माध्यम से, उन्होंने अनगिनत दृष्टिहीन लोगों के लिए शिक्षित होने का मार्ग प्रशस्त किया और एक समावेशी और सुलभ वातावरण का निर्माण किया। वे खुद नेत्रहीन हैं और क्रिकेट के बहुत बड़े शौक़ीन हैं। वे अंधे क्रिकेट के समर्थक हैं। वे क्रिकेट एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड इन इंडिया और वर्ल्ड ब्लाइंड क्रिकेट लिमिटेड के अध्यक्ष भी हैं।

नामांकन प्रक्रिया का उल्लेख करते हुए टेरी थॉमस, इनोवेशन सेंटर लीडर और पार्टनर-ऑपरेशंस, एडवाइजरी सर्विसेज, अर्न्स्ट यंग, जो नामांकन प्रक्रिया को मान्य करते हैं, ने कहा कि, देश भर से आये 200 से अधिक नामांकन में से छह प्राप्तकर्ताओं का चयन हुआ।

16 वें कैविनकर एबिलिटी अवार्ड्स की रात प्रेरणादायक और भावात्मक क्षणों का मिश्रण था, जिसने कई लोगों को भावुक बना दिया और बहुत लोगों को अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित किया। एक भरपूर ऑडिटोरियम ने छह प्राप्तकर्ताओं को अपने तालियों से उत्साहित किया। समारोह के अंत में मैं यह सोचने के लिए मजबूर हो गयी कि सफलता वास्तविक मतलब क्या है और यह विभिन्न व्यक्तियों के लिए क्या मायने रखता है। अगर सफलता खुद हमारे हाथों में है, तो हम विकलांग व्यक्तियों के सफलता को क्यों अलग से देखते हैं?

दुनिया भर में विजेताओं का सामान्य गुण अचल साहस, धैर्य और विश्वास हैं। सफलता और असफलता की बहुत सारी कहानियां हैं जो प्रेरणा प्राप्त करने के लिए पढ़ सकते हैं, फिर भी यह प्राप्तकर्ताओं मेंकुछ अलग है।क्या यह उनकी दृढ़ निश्चय, जीवन के लिए उत्साह या अपने सपनों को हासिल करने का जूनूनहै? 16 वीं सी.के.ए अवॉर्ड्स रात का अंग होने के कारण मुझे जवाब मिला, कि यह उनका दृश्टिकोंण है जो असामान्य को सामान्य के रूप में देखते है असंभव को संभव करते हैं और हर बार जब कोई उन्हें कहता है की वे कुछ काम नहीं कर सकते वे उस काम को काम कर दिखते हैं।

विशेष मान्यता पुरस्कार

डॉ. श्रुति मोहापात्रा

भुबनेश्वर, ओड़िशा

विकलांगता अधिकार कार्यकर्ता, स्वाभिमान,एक विकलांगता सूचना और संसाधन केंद्र के संस्थापक और सीईओ, प्रसिद्ध विद्याविद् और सरकारी और समाज में कई महत्वपूर्ण समितियों की सदस्य, डॉ. श्रुति मोहापात्रा, अपने ख्यातियों पर आराम करने वालों में से नहीं है। उनका जुनून "आनंद लो और खुशी बनाओ" है। वह उन परियोजनाओं को निष्पादित करना जारी रखती है जो समावेशन की ओर प्रगति करती हैं।

"इस साल का संकल्प बहुत कुछ लिखने का है। नए और युवा नेताओं के उबरने के साथ ही हमे एक कदम पीछे हटकर उनको अवसर देना चाहिए ", भारत के सबसे प्रभावी विकलांगता कार्यकर्ताओं में से एक, डॉ. श्रुति मोहापात्रा कहती हैं। लेकिन लिखना उसके प्रस्तावों में से एक ही है। हमेशा की तरह, डॉ. श्रुति मोहापात्रा के मन में कई नए विचार और योजनाएं हैं।तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि श्रुति ने अपने अगले परियोजना की योजना बनाई है। " इस वर्ष का दूसरा संकल्प ओड़िशा राज्य के विकलांगता नेटवर्क के साथ काम करते हुए हर गांव में आखिरी व्यक्ति तक समावेशन का संदेश पहुंचाना है"।इसमें नए आरपीडी कानून, सुगम्य भारत अभियान और दीर्घकालिक विकास लक्ष्यों को शामिल किया गया है। यह संदेश विकलांग व्यक्तियों के खिलाफ रूढ़िवादी और पूर्वाग्रहों के रूप में मौजूदा सामाजिक पूर्वाग्रहों पर भी प्रकाश डालेगा और विकलांग व्यक्तियों के क्षमताओं और योग्यतों पर जागरूकता पैदा करेगा।

इन विषयों पर आधारित चित्रों और संदेशों से सज्जित "जागरूकता रथ" राज्य की राजधानी भुवनेश्वर से रवाना होकर, हर जिला और ब्लॉक मुख्यालय में रुकते हुए पूरे ओड़िशा का सफर करेगी।इसके साथ ही साथ ब्लॉक मुख्यालय, पंचायत और ग्राम सभाओं के बाकी हिस्सों में कार्यक्रम होंगे।

CAVINKARE ABILITY

SPECIAL RECOGNITION AWARD

given to

Dr. Sruti Mohapatra

on the 3rd day of February 2018 in Chennai
in recognition of excellence achieved against all odds

A well known figure in India's disability circles
An applauded and celebrated personality, inspiring one and all
With her philosophies of life as well her successes
Was a time when, as a sprightly young woman, she sought
to achieve a life of full responsibility and duty to the country
As an officer of the Indian civil Services,
When something as random as a car accident, involving a drunken driver
Caused all sensations of limb to vanish, leaving her
A quadriplegic – paralysed shoulder down
Overpowering all odds, she rose to be
The quintessence of all that a human being could rise to be
While a position at India's august government offices evaded her
Thanks only to the indifferent attitudes of the people at the helm
She went on to establish a centre to
Coach other IAS aspirants realize their dreams
Also initiating Swabhiman, a nonprofit, cross disability organization,
Advocating for, and serving persons with disabilities in India and South Asia.
Campaigning for rights-based approach to disability for several policy changes,
Impacting the lives of all persons with disabilities.
Not for a moment allowing her condition to
Prove detrimental to anything she wanted to achieve
Surrounded by love and admiration all round,
She spreads out her net of accomplishments
Far & wide as the world knows her.

हर पड़ाव पर, स्थानीय लोगों में संवेदनशीलता सत्रों को आकर्षित करने की योजना बनाई गई है, जिसमें सैकड़ों विकलांग व्यक्तियोंऔर एनजीओ, सरकार, नागरिक समाज और मीडिया के प्रतिनिधियों को शामिल किया जाएगा। स्थानीय लोगों के दिमाग में संदेश को मजबूत बनाने के लिए गांव के एक दीवार पर समावेशन का संदेश चित्रित किया जायेगा ।इन स्थानों पर आयोजित की जाने वाली प्रमुख गतिविधियां सार्वजनिक बैठक, ऑडिओ-विज़ुअलशो, फोटो प्रदर्शनियां, पत्रक और पोस्टर का वितरण, विकलांग लोगों द्वारा अपने प्रतिभा का प्रदर्शन और प्रेस से मुलाकात आदि हैं। ब्लॉक और जिला मुख्यालयों पर प्रतिनिधियों के साथ, जो उस क्षेत्र के लिए संवेदीकरण कार्यक्रम की योजना और क्रियान्वित करेगा, बैठकें आयोजित किया गया हैं।

श्रुति का तीसरा संकल्प यह सुनिश्चित करना है कि 2019 लोकसभा चुनावों के लिए ओड़िशा में सभी मतदान केंद्रसुगम्य हों। वह चुनाव पर्यवेक्षक समूह बनाने की प्रक्रिया में हैं। जिसने बहुत कुछ लिखने का निर्णय लिया है यह काम उनके लिए काफी चुनौतीपूर्वक है, लेकिन डॉ.श्रुति मोहापात्रा पीछे हटने वालों में नहीं है।

विकलांगता क्षेत्र में श्रुति सिर्फ एक योद्धा ही नहीं बल्कि एक नेता भी है।वे स्वाभिमान की संस्थापक है, जो विकलांग लोगों के सशक्तीकरण के लिए काम करता है, शेयर की संस्थापक सदस्य (शेयर्ड एंटरटेनमेंट एंड रिक्रिएशन), जो विकलांगों के लिए नुक्कड़- नाटक, ट्रेक, फैशन शो और अन्य कार्यक्रम आयोजित करता है, विमेंस सेल ऑफ़ डिसेबल्ड पीपल इंटरनेशनल (डब्ल्यू. सी.डी.पी.आई) की सदस्य होने के साथ ही संयुक्त राष्ट्र में इसकी सलाहकार भी है; विकलांग लोगों के लिए राज्य समन्वय समिति के सदस्य, विकलांग के लोगों के रोजगार के संवर्धन के लिए राष्ट्रीय परिषद के पूर्वी क्षेत्र समन्वयक, और उत्कल विश्वविद्यालय में विकलांगता संसाधन केंद्र के समन्वयक ... और इस सब के साथ-साथ वे अपने घर से ही विकलांग लोगों के लिए एक परामर्श केंद्र चलाती हैं।

कहा जाता है कि जीवन के अनुभव किसी को या तो कड़वा या बेहतर बना सकता है। श्रुति के मामले में, उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों से न सिर्फ अपने जीवन को बेहतर बनाया, बल्कि देश भर के अनगिनत विकलांग लोगों के जीवन को भी।1987अप्रैल में हुयी एक दुर्घटना ने उनके पूरे जीवन को ही पलट दिया। 24 वर्ष की विश्वविद्यालय की स्वर्ण पदक विजेता और एक राष्ट्रीय स्तर के बास्केटबॉल खिलाड़ी, जिन्होंने भारतीय सिविल सेवा के ग्रुप ए एलाईड सर्विसेज के लिए योग्यता प्राप्त की थी।अपने निजी जीवन में वे अपने प्रेमी से शादी करने वाली थी। जीवन में सब कुछ सही चल रहा था। तभी विनाशकारी दुर्घटना ने उन्हें क्वाड्रिप्लेजिक बना दिया। उनके मंगेतर ने उन्हें छोड़ दिया। यूपीएससी ने उन्हें कम दर्जे और वेतन में नौकरी पेश की। जब उन्होंने इस पर सवाल उठाया, तो वह प्रस्ताव भी वापस ले लिया गया। सत्तावाद की उदासीनता ने उन्हें अवाक कर दिया, पर साथ ही उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।वे सिविल सेवा आकांक्षियों को,जो अब सरकार, बैंकों, अनुसंधान संस्थानों, विश्वविद्यालयों और अन्य सेवाओं में विभिन्न पदों पर काम कर रहे हैं, प्रशिक्षित करने लगे।

साथ ही साथ श्रुति ने अपने आगे की पढ़ाई जारी रखी और 1993 में एक फेलोशिप और नेशनल यंग साइंटिस्ट पुरस्कार जीता। उन्होंने 1994 में डॉक्टरेट किया और विकलांग लेखों के कई शोध पत्र प्रकाशित किए और इसके अलावा उन्होंने कई लोकप्रिय लेख, कविताओं और लघु कथाएं भी प्रकाशित की।उनकी वकालत ने भुवनेश्वर के कॉरपोरेट कंपनियों में विकलांग लोगों को नकारी में भर्ती करने के लिए प्रेरित किया और पुरी के जगन्नाथ मंदिर को व्हीलचेयर के उपयोग के लिए सुगम बनाया।

इस बीच अंजलि, विकलांग बच्चों के लिए स्वाभिमान का वार्षिक त्यौहार में अब गैर-विकलांग छात्र भी भाग ले रहे हैं। इस क्षेत्र के सबसे बड़े त्योहारों में से एक के रूप में (अपने 16 साल की यात्रा में 40,000 से अधिक बच्चों की उपस्थिति के साथ) यह आगे के पीढ़ी के दिमाग में समावेशन के महत्व को जताने का प्रयत्न कर रहा है। स्वाभिमान ने वोडाफोन फाउंडेशन के साथ मिलकर उत्कल विश्वविद्यालय द्वारा लिखित पाठ्यक्रम की ऑडियो बुक रिकॉर्डिंग जारी करने का काम किया।स्वाभिमान का लीडरशिप ट्रेनिंग एंड एम्पावरमेंट प्रोग्राम (वाई.एल.टी.ई.पी) उच्च माध्यमिक और कॉलेज के विकलांग छात्रों को उनके कॉलेज और समुदाय में नेता बनने में प्रशिक्षण देता है। स्वाभिमान की सक्षम कार्यक्रम भुवनेश्वर के झोपड़पट्टियों में रहने वाले विकलांग बच्चों को उच्च विद्यालय की शिक्षा पूरी करने, शौक या कौशल विकसित करने के लिए, ताकि आगे जाकर वो एक पेशे में बदल सके, समग्र समर्थन प्रदान करता है।

साफ़ है कि श्रुति मोहापात्रा की सोच बहुत बड़ी है ... और उसकी उल्लेखनीय यात्रा अभी भी जारी है। वह मुस्कुराते हुए कहती है "मैं असफलता स्वीकार कर सकती हूँ, लेकिन कोशिश न करना स्वीकार नहीं कर सकती"।

झलकियाँ

एबिलिटी के सदस्य

ईश्वर अचंता

विनोद सुराणा

आंडाल दामोदरन

मरीयज़ीना जॉनसन

बी. श्रीनिवासन

दर्शकों का एक अनुराग

सी.के. रंगनातन

ब्लासे

अनुराधा श्रीराम और विजय भास्करन

जानकी पिल्लई

विनीत

मास्टरी अवार्ड

राजू रामेश्वर उप्राडे, पुणे, महाराष्ट्र

विकलांगता, वित्तीय बाधाओं और अस्वीकरण का सामना करने के बावजूद राजू रामेश्वर उप्राडे ने इंजीनियर बनने के अपने सपने को साकार करते हुए टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (टीआईएफआर) में जॉइंट मीटरवेव रेडियो टेलीस्कोप पर काम कर रहे हैं ।

35 वर्षीय राजू के आचरण में दिख रही शांति और स्थिरता का कारण जीवन के सपने को साकार करने के उनके अविश्वसनीय यात्रा में प्राप्त किया गया बुद्धिमता और समझ ही है।शाम के दौरान उनकी कहानी को कई बार साझा करने की उनकी तत्परता उसके चारों ओर हर किसी को प्रेरित करने की उनकी उत्सुकता को बताती है।उनके सकारात्मक स्वभाव के बारे में उनके सहयोगियों, मित्रों और परिवार के सदस्यों ने प्रकाश डाला।

उनका जन्म एक बड़े परिवार में हुआ था और जन्म के वक्त से ही उनके घुटने पैरों के पीछे थे।राजू ने सर्जरी, उपचार और चिकित्सा देखभाल में कई साल बिताया। हालांकि, जब डॉक्टर एक विशिष्ट निदान प्रदान नहीं कर सके, तो हताश होकर उसके माता-पिता ने अंततः भगवान पर सब कुछ छोड़ दिया।

बौनापन, कमजोर फेफड़े, शरीर के विभिन्न विकृतियों के कारण सामान्य गिरावट, स्पाइन पर दबाव जिसके परिणामस्वरूप लम्बर कम्प्रेशन सर्जरी, महाधमनी वाल्व की बीमारी और हल्के महाधमनी स्टेनोसिस जैसे स्थितियां से उनकी लड़ाई अभी भी जारी हैं।फिर भी, इन स्तिथियों ने उन्हें आगे बढ़ने से नहीं रोका। गोंदिया, महाराष्ट्र से धीरूभाई अंबानी छात्रवृत्ति के माध्यम से सूचना प्रौद्योगिकी में उन्होंने अपनी बी.ई. किया। लड़ाई की भावना, दृढ़ता और मुस्कुराहट के साथ सशस्त्र, उन्होंने चुनौतियों पर काबू पा लिया और विश्वविद्यालय में अग्रणी स्थान प्राप्त किया, भले ही इंजीनियरिंग ड्राइंग की पन्नों को हाथ में पकड़ना उनके लिए बहुत बड़ा चुनौती था।आज, वे नेशनल सेंटर फॉर रेडियो एस्ट्रोफिजिक्स द्वारा स्थापित टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ

CAVINKARE ABILITY

MASTERY AWARD

given to

Raju Rameshwar Uprade

on the 3rd day of February 2018 in Chennai
in recognition of excellence achieved against all odds

Being a person with dwarfism notwithstanding,
Allowing neither the associated multiple disabilities
Nor the negative mindsets, condescending attitudes and
Inaccessible spaces to prove hindrances
Revealing a spirit indomitable to life's uncertainties…
With perseverance and fortitude, he has
Made himself a go-getter, setting an example
to many others with similar disability
Forging ahead through rampant discrimination
Throughout not just school and also as a scholarship student
In engineering college but also in his employment at the
GMRT-NCRA-Tata Institute of Fundamental Research
An engineer, a poet and writer – all in one
Living independently with fortitude
Demonstrating the saying
"Where there is a will, there is a way"

फंडामेंटल रिसर्च (टी.आई.एफ.आर) के जइंट मेटरेवावे रेडियो टेलिस्कोप पर काम कर रहे हैं।वे गोडफ्रे फिलिप्स माइंड ऑफ स्टील अवार्ड के विजेता हैं। बौनेपन के जटिलताओं और चुनौतियों के बावजूद यह उनकी श्रेय है कि वे पिछले 17 वर्षों से स्वतंत्र रूप से रह रहे हैं।वे अपने परिवार को ही अपने शक्ति और ताकत का कारण मानते हैं, खासकर अपने माता को जिन्होंने हमेशां उनकी क्षमताओं और प्रतिभाओं पर भरोसा किया।

अब भी, उनके कुछ सहयोगि याद करते हैं कि कैसे वे अकेले दो थैलियों को लेकर संस्थान में पहुंछे और सबको आश्चर्यचकित कर दिया, वो भी रेलगाड़ी के फर्श (अपुष्टींकृत आरक्षण के कारण) पर रात बिताने के बाद।यह उनके सीखने और कुछ हासिल करने के दृढ़ संकल्प काएक झलक है।प्रारंभिक वर्षों के दौरान संस्थान के पृथक स्थान के कारण विभिन्न इमारतों के बीच आने-जाने में, अलग इमारत में स्थित शौचालयों का उपयोग करने में और उनके कार्यालय से छात्रावास तक की लंबी दूरी पैदल चलकर तय करने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ा।लेकिन संस्थान में उनकी बढ़ती वरिष्ठता के साथ, वे इन सुविधाओं को पाने में सक्षम रहे जिससे उनका जीवन थोड़ा आसान बन गया और वे अपने काम पर अधिक ध्यान केंद्रित कर पाए। राजू अपने काम के बारे में इतना भावुक हैकि वह इसके बारे में कई घंटों तक बात कर सकते हैं। उनका अपने काम के प्रति इतना लगाव है कि उन्होंने अपनी परियोजनाओं को पूरा करने के लिए अपने सर्जरी को दो साल तक भी टाल दिया।किसी ऐसे व्यक्ति के लिए,जो शुरुआत में एक आनुवंशिकीवादी होने की इच्छा रखते थे, उन्होंने अपने लिए टी.आई.एफ.आर में शोध वैज्ञानिक के रूप में एक शानदार कैरियर का निर्माण किया है। अपने काम के अलावा, राजू रोमांटिक कविता पढ़ना और लिखना पसंद करते हैं।

उनके साथी और सहकर्मी राजू के विभिन्न कौशल और क्षमताओं की प्रशंसा करते हैं । राजू में, उन्होंने एक प्रेरक नेता के सभी गुण पाया। जब पूछा गया कि उन्होंने कैसे कैरियर की सही चुनौतियों के बारे में स्पष्टता मिली, और कहाँ से इतना ताकत पाया, तो उन्होंने दो चीजों का उल्लेख किया: उनके परिवार और इस दुनिया में खुद को साबित करने के लिए उनका उत्साह।

मास्टरी अवार्ड

गौरी शेखर गाडगील

पुणे, महाराष्ट्र

चैंपियन तैराक, राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता अभिनेत्री, भरतनाट्यम नर्तकी और अधिक ... गौरी शेखर गाडगील को सपना देखने और उन्हें साकार करने से कुछ भी रोक नहीं सकता।

एक नए वातावरण में होने के कारण गौरी के व्यवहार को आकस्मिकता के रूप में देखा जा सकता है, लेकिन कुछ ही मिनटों में यह गायब हो जाता है। वह एक जवान औरत है जो लोगों से मिलना चाहती है, और अपने शब्दों से स्नेहभाव फैलाती है। जब वह तैराकी, नृत्य और अपने बाकी अन्य उपलब्धियों , जिसमे फिल्म 'पीला' - जिसमे उसने अपना ही खिरदार निभाया- में उनके शानदार प्रदर्शन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार भी शामिल है, के बारे में बात करती है उसके आँखों में एक चमक दिखती है।

गौरी को डाउन सिंड्रोम है और तैराकी के लिए उनकी रुचि ने उसे क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, कई तैराकी प्रतियोगिताओं में जीत दिलाई । चिकित्सा के रूप में आरंभ हुआ उसका तैराकी जल्द ही जुनून में बदल गया और जल्द ही उसने प्रशंसा योग्य प्रदर्शन दिया।स्थानीय स्तर पर नृत्य और तैराकी प्रतियोगिताओं की जीत ने उसे और अधिक प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया, जिसके कारण उसे विभिन्न संस्कृतियों, लोगों और समाजों के बारे में जानने का अवसर मिला।

गौरी ने कई पदक और पुरस्कार जीती है जिसमे विशेष ओलंपिक एशिया पसिफ़िक रीजनल गेम्स (2013) में रजत पदक (800 मीटर फ्री स्टाइल) और कांस्य पदक (400 मीटर फ्री स्टाइल और 450 मीटर फ्रीस्टाइल रिले), शांगई स्पेशल ओलंपिक (2007) में 50 मीटर ब्रैस्टस्ट्रोक के लिए चौथा स्थिति रिबन, 25 मीटर बटरफ्लाई

CAVINKARE ABILITY

MASTERY AWARD

Gauri Shekar Gadgil

given to

on the 3rd day of February 2018 in Chennai
in recognition of excellence achieved against all odds

A dancer, a solo performer,
A champion swimmer with
Silver & Gold medals at various championships
A graduate in Sociology from a mainstream college
Of the University of Pune
And, as an actor, playing the role of a protagonist
In her very first film "Yellow" she effortlessly won
National Award as Best Actress and a Jury Special Mention
Does it matter that Gauri Shekhar Gadgil
Is a person with Down's Syndrome?
With a constant striving for fresh challenges
Gauri is proof of the fact that talent transcends disability,
And that given the right opportunities
At the right time, there are more role models amongst
Persons with disabilities than anywhere else in the conventional world.

प्रतियोगिता में रजत पदक, वाटर ओपन लॉन्ग डिस्टेंस स्विमिंग रेस (2014) में स्वर्ण पदक, यूपिऑयएम् बीएतल वर्ल्ड टूर 2016 में स्वर्ण पदक, मॉडर्न पेंटथलोन नेशनल चम्पिओन्शिप्स में स्वर्ण पदक शामिल है।

अब गौरी स्विमिंग कोच बनना चाहती है। वह भरतनाट्यम शास्त्रीय नृत्य की परीक्षाओं के लिए भी तैयारी कर रही है, उसने कंप्यूटर कोर्स पूरा किया है और एस.पी कॉलेज पुणे से समाजशास्त्र में डिग्री लिया है।

गौरी की सफलता के पीछे उनकी माता-पिता, शेखर और स्नेहा गाडगील का दृढ़ संकल्प और समर्पण है। उनके बहादुर विकल्प और समर्थन ना होता तो गौरी की बुद्धि और कौशल का पता ही नहीं चलता और भारत एक अंतरराष्ट्रीय स्विमिंग चैंपियन को गंवाता।जब पूछा गया, "आपकी बेटी की सबसे बड़ी सफलता क्या है?", शेकर ने जवाब दिया, "हम चाहते थे कि वह समाज में स्वतंत्र रूप से जी सखे और खुद का ख्याल रखें। आज, उसने यह सब कुछ हासिल कर लिया है। उनकी मां और मैं उसकी स्वतंत्रता को उसकी सबसे बड़ी सफलता के समझते हैं ।"

मन में ठाने विषय को हासिल करने की गौरी के दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास ने अक्सर उसके माता-पिता को चकित कर दिया। उदाहरण के लिए, जब उसने फैसला किया कि वह अपनी बहन की तरह स्नातक बनना चाहती हैं , तो उसके माता-पिता अनिच्छुक और चिंतित थे कि कॉलेज में उनके साथि शायद उन्हें स्वीकार नहीं करेंगे। गौरी ने 2016 में बी.ए. पूरा करके न केवल उन्हें गलत साबित किया, बल्कि मित्रों का एक बड़ा समूह बना लिया। उसके पिता उस दिन को याद करते हैं जब उन्होंने गौरी को कॉलेज गेट पर छोड़कर उसपर निगरानी रख रहे थे और उन्होंने देखा कि गौरी पूरे उत्सुकता और पैरों में एक उछाल के साथ अपने दोस्तों से मिलने के लिए आगे बढ़ी। तब उन्हें एहसास हुआ कि उनकी बेटी अंततः आजादी को चखा, और अब उसे सपने देखने और उसे साकार करने से कुछ भी रोक नहीं सकता।

जस्मिना खन्ना

मुंबई,महाराष्ट्र

जस्मिना खन्ना ने सेरिब्रल पाल्सी की चुनौतियों को शैक्षणिक उपलब्धियों पाने से या बार-बार के अस्वीकृति को अपने लिए शानदार कैरियर बनाने से रोकने नहीं दिया। उसने अपने दिल में खुद को साबित करने का दृढ़ संकल्प कर लिया।

जस्मिना की आंखों में चमक संक्रामक और बच्चों जैसा है। उनके चेहरे की ख़ुशी में सेरिब्रल पाल्सी से उत्पन्न जटिलताओं का पता नहीं चलता, और न ही उस कठिन यात्रा का संकेत है जिसके कारण आज वह इस स्थान पर पहुंची है। उनके अद्भुत साख के बावजूद, सॉफ्टवेयर उद्योग में नौकरी पाने का उनके आठ साल के संघर्ष का संकेत भी उनके चहरे पर नहीं मिलता।

जस्मिना ने इंटरनेशनल स्कर्म इंस्टीट्यूट से स्कर्म मास्टर 92% के साथ पूरा किया। उन्होंने सितंबर 2008 में क्वालिटी अशयूरन्स इंटरनेशनल से 75.5% के साथ सी.स.टी.ईप्रमाणन प्राप्त किया।

उसने ओरेकल संस्करण 7 और डी 2 के, फॉक्सप्रो प्रोग्रामिंग, एमएस ऑफ़िस में एक कोर्स पूरा किया।उसने वेब डिजाइनिंग (एच.टी.एम.एल डी.एच. टी.एम.एल जावास्क्रिप्ट, वी.बी स्क्रिप्ट और ए.एस.पी), पेजमेकर, कोरल ड्रॉ और फोटोशॉप सीखा। उसने यह सब उसके बाएं हाथ की तर्जनी का उपयोग करते हुए किया। जस्मिना विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम में उपलब्ध अभिगम्य विकल्पों जैसे स्टिकी कीस ऑप्शन और स्पेशल ट्रैक बॉल माउस का उपयोग करके कंप्यूटर पर काम करती है।

इस सब के बावजूद, काम हासिल करना उनसे लिए बहुत मुश्किल था। उसने बताया "मैं तकनीकी साक्षात्कार, टेलीफ़ोनिक साक्षात्कार पार कर लेती लेकिन जब लोग मुझसे मिलते और मेरी विकलांगता देखते, मुझे खारिज देते।"अस्वीकृति ने उसे और अधिक प्रभावित किया क्योंकि शैक्षिक रूप से वह बहुत सफल थी।एस. एस.सी में उन्होंने 72.71% अंक प्राप्त किया जिसमे गणित का 100% शामिल था और उसके बाद एच.एस.सी में 66.67%। इसके बाद उन्होंने सैंट जेवियर कॉलेजसे राजनीति विज्ञान में स्नातक की डिग्री और मुंबई विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में एम.ए.प्राप्त किया।

CAVINKARE ABILITY

MASTERY AWARD

given to

Jasmina Khanna

on the 3rd day of February 2018 in Chennai
in recognition of excellence achieved against all odds

Unfazed by her severe disabilities
On account of Cerebral Palsy
Her indomitable fighting spirit and unceasing optimism
Took her on the path that she designed for herself
Allowing neither disability nor other trials and tribulations
To stand in the way of achievement,
Choosing her own subjects of study in a mainstream college
As well as computer applications and software development
Having faced rejection, stereotypical attitudes and discrimination
From day one, today she rides the crest of success
As a bona fide and valued employee of a global IT company
Earning for herself the mention of being in the Top Five
Inspiring Role Models with Cerebral Palsy
Emphasising that it is attitude
That determines inclusion, not a disability
She's surely an icon for all who endeavour
To be masters of their own destiny

हालांकि, नौकरी पाना एक बड़ी चुनौती थी। 2005 में, अंततः उसे रिह्ल सॉफ्टवेयर में डाटा एंट्री की नौकरी मिली। पांच साल बाद, उसने सिंटेल इंडिया के तकनीकी और एचआर साक्षात्कार पार किया, लेकिन उसकी विकलांगता के कारण एक बार फिर उसे खारिज कर दिया गया।खिड़की के माध्यम से पड़ते धीमे सूर्य की किरण की तरह, अंत में किसी के परिचय पत्र के आधार पर उसे अनुबंध के आधार पर सिंटेल इंडिया में नौकरी मिली और कंपनी में शामिल होने के आठ महीनों के भीतर ही अपने अच्छे प्रदर्शन के कारण वे कंपनी के नियमित कर्मचारी बन गए और उनका वेतन भी दोगुना कर दिया गया। अब जस्मिना लगभग आठ साल से अधिक समय तक सिंटेल इंडिया में काम कर रही है। "मैंने खुद को साबित कर दिया है मेरी कंपनी अब मेरी क्षमता को समझती है ", वह आश्वासन के साथ कहती हैं।अपने नवीनतम काम के बारे में बोलते हुए जस्मिना ने कहा, "यह एक कठिन, मजेदार और रोमांचक नौकरी है।" पिछले कई सालों से फॉरटूयून 500 बैंकिंग और वित्त कंपनियों के सॉफ्टवेयर का गुणवत्ता परीक्षण के बाद, वह अब अपने जीवन के एक नए रोमांचक चरण में हैं।आज, वह एक प्रमुख स्वास्थ्य देखभाल फर्म के लिए वेब अनुप्रयोग विकसित कर रही है। वे कहती हैं, "मैंने एक गाइड की मदद से वेब एप्लिकेशन सीखा। जब मैंने नौकरी शुरू किया, तो मुझे लोगों की प्रतिक्रिया और उनका मेरे साथ रवैया को लेकर डर था। लेकिन एक बार जब वे मेरे साथ काम करने लगे तो सब लोग सहज हो गए और अब हमलोग मज़े ले रहे हैं।"

जस्मिना का दिन अब भरपूर है, वह इतनी व्यस्त है कि उसे अब लिखने के लिए कोई समय नहीं मिल रहा है। जस्मिना ने एक लेखक के रूप में अपना पेशा शुरू किया और उसमे भी उत्कृष्ट प्रदर्शन दिखाया। साइबर मीडिया लिमिटेड की साप्ताहिक पत्रिका डी.क्यू चनल्स इंडिया के लिए उन्होंने वेब समीक्षाएं लिखीं। उसने रीडिफ कम्युनिकेशंस के लिए एक भारतीय होटल गाइड तैयार किया। सॉफ्टवेयर उद्योग पर अपना ध्यान केंद्रित करने से पहले उन्होंने मई 2002 में कॉम्पिटिशन मास्टर के लिए एक आवरण कथा और अमेरिकी फर्म वेबस्कूलिंग. इंक में बच्चों के लिए 90 से अधिक सामान्य ज्ञान लेख लिखे हैं।

एक समय था जब उसके सुरक्षात्मक माता-पिताउसे बाहर भेजने और काम पर भेजने के लिए झिझकते थे, जिसके कारण जस्मिना ने घर से काम करने की कोशिश की। आज वे रात के 10 बजे तक काम करते हैं और, मुंबई के सुलभ कार सेवा, ईज़ी मूव के कार का उपयोग करते हुए वे खुद अपने आप सभी जगह को जाते हैं।हाल ही में ऑनलाइन समाचार पोर्टल, न्यूज़हूक ने उन्हें सेरिब्रल पाल्सी के शिकार भारत के अग्रणी 5 प्रेरणास्रोत मॉडलों में से एक घोषित किया।

जबकि जस्मिना कहती हैं, "मेरे आसपास के लोग मुझे प्रेरणा देते हैं", उनके भाई से कहते हैं, "हमें उनकी उपलब्धियों पर गर्व है और वह आर्थिक रूप से पूरी तरह खुद को समर्थन करती है"मिले श्रेय को त्वरित खारिजते हुए जस्मिना कहती है, "मैं अपने परिवार के समर्थन के बिना कुछ नहीं हासिल नहीं कर पाती ... अब मैं दुनिया को जीतना चाहता हूं"।

भविष्य के बारे में विचार करते हुए जस्मिना को लगता है कि समावेशन के लिए एक बहुपक्षीय दृष्टिकोण होना चाहिए। उनका सुझावहै कि "विकलांग लोगों को नौकरी प्रदानकरने के बारे में कॉर्पोरेट्स को एक खुली सोच की आवश्यकता है। हमें अधिक जागरूकता पैदा करने की जरूरत है जिसके लिए कई तरीखे हैं। सार्वजनिक स्थानों में विकलांग लोगों की थोड़ी और अधिक दृश्यता भी अधिक जागरूकता पैदा कर सकती है। इस संबंध में, दुर्गम बुनियादी सुविधाएँ एक प्रमुख मुद्दा है जिसे संबोधित किया जाना चाहिए"।

मास्टरी अवार्ड

डॉ.रोशन जवाद शेख

मुंबई,महाराष्ट्र

इस युवती को कुछ भी रोक नहीं सकता, जिसने मेडिकल कॉलेज में अपने सही स्थान को सुरक्षित करने के लिए पी.आई.एल(PIL) का मार्ग चुना। ट्रेन दुर्घटना, गरीबी और सत्तावादी बाधाओं, द्विपक्षीय विच्छेदन इन सब का सामना करते हुए डॉ. रोशन जवाद शेख,वैद्यकीय शिक्षण में अपना स्नातकोत्तर लेने के लिए तैयार हैं।

डॉ. रोशन जवाद शेख कहती हैं, "जब भी कोई मुझसे कहता कि मैं कुछ काम कर नहीं पाउंगी,तो मैं उसे कर दिखाने की और अधिक दृढ़ निश्चय कर लेती हौं।" रोशन की कोमल चहरे के पीछे एक मजबूत संकल्प छिपा है ... हर बार जब उसे चुनौती - छोटा हो या बड़ा - का सामना करन पड़ता है। और जब वह अपने कैरियर की बात करता है तो वह उसकी आँखों में एक अतिरिक्त चमक नज़र आती है। एन.ई.ई.टी कॉमन एंट्रेंस टेस्ट में उत्तीर्ण होने के बाद अब वह वैद्यकीय शिक्षणमें अपनीपोस्ट ग्रेजुएशन करने लेने के लिए तैयार हैं।

आठ साल पहले, यह असंभव लग रहा था। 7 अक्तूबर 2008 को एक भयानक ट्रेन दुर्घटना के बाद सोलह साल के रोशन के पैर कट गए। अंजुमन इस्लाम कॉलेज में 11 वीं कक्षा के पहले चरण की परीक्षा देने के बाद मुंबई लोकल ट्रेन में कॉलेज से 10 किमी की दूर अपने घर के यात्रा के दौरान भीड़ के कारण रोशन को रेलगाड़ी से धक्का देकर बाहर गिराया गया और तेज रफ्तार वाली रेलगाड़ी उनपर से होकर गुजरी।कोई भी उस युवा लड़की की मदद करने के लिए आगे नहीं आया और वह 45 मिनट तक पटरियों पर पड़ी रही और उसकी खून बह रही थी। जिस अस्पताल में उसे ले जाय गया वही उसे उचित इलाज न मिलने के कारण उसके पैरों में गैंग्रीन लग गया । जब उसके परिवार रोशन के इलाज का खर्च उठा नहीं पाए तब उनके स्कूल और कॉलेज ने इलाज का खर्च उठाया क्योंकि रोशन एक गुणवत छात्रा थी। उसने अपने दोनों पैर खो दिए (घुटने के ऊपर दाएं पैर और घुटने के नीचे बाएं पैर के काट जाने के कारण वह 86% विकलांग हो गयी) और वह एक गरीब परिवार से आने के कारण (उसके पिता एक सब्जी विक्रेता हैं), उसका भविष्य अंधकारमय दिख रहा था।

इसके बावजूद रोशन ने व्हीलचेयर का

CAVINKARE ABILITY

MASTERY AWARD

given to

Dr. Roshan Jawad Shaikh

on the 3rd day of February 2018 in Chennai
in recognition of excellence achieved against all odds

The daughter of a vegetable vendor,
Despite losing both her lower limbs
In a most gruesome train accident,
And having to see her own legs being
Severed off by a moving train
Allowing neither disability nor other trials and tribulations
To stand in the way of achievement.
Displaying a strong resolve that revealed
A spirit indomitable to obstacles, she resolutely
Pursued her dream of becoming a doctor,
Fighting her way through the Medical Council, who
Disqualified her, on grounds of disability
Winning the judgment in her favour and triumphantly
Entering the medical college several months late, but nevertheless
Securing a distinction in her medical exams,
Amongst the several laurels that she has gained,
She has also been mentioned in the
Maharashtra State Board Class Vll Question Paper
Today, she interns at the KEM Hospital, Mumbai,
Even while preparing for the NEET Common Entrance Exam
She remains the epitome of that rare never-say-die spirit and
Leads the life of an extremely successful
woman of substance.

उपयोग करके अपना 11 वीं कक्षा पूरा किया। जब वह अपने 12 वीं कक्षा कर रही थी, तब उसने कृत्रिम पैर का उपयोग करना शुरू किया , जिससे उसे बहुत दर्दमहसूस हुआ, फिर भी उसने अपनी एचएससी में 75% प्राप्त किया। वे बताती हैं "उन अंधेरे दिनों के दौरान, मेरी माँ ने मुझे बहुत समर्थन और प्रेरणा दिया। उसने मुझे दुर्घटना के बावजूद जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। "

हालांकि रोशन का परिवार उसके साथ खड़ी रही और उसे डॉक्टर बनने का अपने सपनों को साकार करने को प्रोत्साहित किया, बाकी लोग उन्हें हतोत्साहित कर रहे थे और कहाते था कि वह "एमबीबीएस की पढ़ाई की मांग पूरा नहीं कर पाएंगी।" लेकिन उसने उत्साह के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना जारी रखा।

उनकी कड़ी मेहनत के कारण उसने महाराष्ट्र के कॉमन एंट्रेंस टेस्ट (सी.ई.टी) 2011 में विकलांग छात्रों में तीसरे स्थान प्राप्त हालांकि, जे जे अस्पताल के सलाहकार ने उन्हें एम्बीबीयस में दाखिला लेने से यह कहकर रेखा कि वह एम्बीबीयस पढ़ाई की श्रमदायक जरूरतों को पूरा नहीं कर पाएगी जिसमे सीढ़ियों पर चढ़ाना और उतरना , रोगियों की जांच करने के लिए लगातार दौरे, प्रयोगशालाओं में घंटों तक खड़े रहना आदि शामिल हैं। हालांकि, एमबीबीएस के परामर्श की प्रक्रिया के दौरान, उनके विकलांगता का मूल्यांकन 86% बताया गया और इस कारण उन्हें प्रवेश से इनकार किया गया क्योंकि सरकारीय मानदंड 30-70% था।

इस फैसले पर निराश होने के बदले उसने अपने ऑर्थोपेडीक सर्जन डॉ. संजय कंटारिया और फिजियोथैरेपिस्ट के प्रोत्साहन और एडवोकेट वी.पी. पाटिल के मार्गदर्शन में अपनी अयोग्यता को खारिज करने के लिए, उन्होंने वैद्यकीय शिक्षण और संशोधन संचालनालय (DMER) , महाराष्ट्र के खिलाफ बॉम्बे उच्च न्यायलय में पी.आई.एल दायर किया। अदालत ने अंततः उसके पक्ष में निर्णय देते हुए डीएमईआर को अपनी नकारात्मकता के लिए भर्त्सना किया। रोशन को 2011 में प्रतिष्ठित सेठ जी.ऐस मेडिकल कॉलेज और के.ई.एम अस्पताल में भर्ती मिला, हालांकि दो महीने देरी से - जब बाकी सभी छात्रों के लिए कक्षाएं पहले ही शुरू हो चुकी थीं। उन्होंने अपनी पहली वर्ष एमबीबीएस की परीक्षा में पहले वर्ग में और उसके दूसरे वर्ष में 75% अंक अर्जित किए।

कॉलेज में, उसके साथी विद्यार्थियों और प्राध्यापकों ने खुले बाहों और दिलों से उसका स्वागत किया, उन्होंने हर किसी की तरह अपनी वैद्यकीय शिक्षण को स्वतंत्र रूप से हासिल करने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके प्रोफेसर डॉ. युवराज भोसले ने टिप्पणी की कि उन्होंने कभी भी रोशन को लंबी और कठोर प्रयोगशाला कक्षा के दौरान अपनी कुर्सी पर बैठते हुए नहीं देखा।

फरवरी 2016 में, दुर्घटना के आठ साल बाद, रोशन ने एमबीबीएस की परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुयी और अपने विस्तारित परिवार में वह पहली डॉक्टर बनी। आज, वह मुंबई लोकल ट्रेनों में अखले यात्रा करती है, अपने प्रोस्थेटिक पैरों के सहायता से अपने कॉलेज हॉस्टल में स्वतंत्र रूप से रहती है।

बेंचमार्क निर्णय के कारण, उसे कई समाराहों में सम्मानित किया गया। रोशन को उर्दू साहित्य अकादमी ने बहादुरी पुरस्कार और अम्पल मिशन ने भारत रतन पुरस्कार से सम्मानित किया।

उनकी वैद्यकीय शिक्षा की मांगों के बावजूद, डॉ. रोशन प्रेरक भाषण देने के लिए समय निकालती हैं और दूसरों को प्रेरित करने के लिए उनकी कहानी साझा करती हैं। इनमें से कुछ वीडियो यूट्यूब पर उपलब्ध हैं और टीवी चैनलों पर प्रदर्शित किए गए हैं। "मेरी लक्ष्य विकलांग छात्रों के रास्ते में बाधाओं को हटाना और उन्हें उनके सपनों को पाने के लिए प्रोत्साहित करना है। "

कैविनकेर एबिलटी अवार्ड फॉर एमिनेन्स के प्राप्तकर्ता

महंतेश जी.के.

बेंगलूरू, कर्नाटका

समर्थनम की स्थापना और उदय का उद्देश्य विकलांग और वंचित व्यक्तियों को सशक्त बनाने के लिए काम करना है। दूरदर्शी और लोगों के लिए प्रेरणाश्रोत, महंतेश जी. के., का शानदार सामजिक योगदानों में से यहएक है ।

महंतेश जी. के. की उपलब्धियों की लंबी सूची को कुछ ही पृष्ठों में उल्लेखित किया नहीं जा सकता। यह दृष्टिहीन (100%) व्यक्ति एक दूरदर्शी है जिसकी जरूरत हर समाज को है। हर बार जब वह अपनी कहानी साझा करता है, तब उनकी विनम्रता, उज्ज्वल मुस्कुराहट और लोगों और जीवन के बारे में उनकी स्वभावपूर्ण जिज्ञासा प्रतिध्वनित होती है। वे अपने साथियों को प्रेरित करने उनमे जुनून को जगाने का उम्मीद करते हैं।

जब महंतेश छः महीने का था तब टाइफाइड के कारण उन्होंने अपने दृष्टि खो दिया। उन्होंने श्री रमण महर्षि अकादमी फॉर ब्लाइंड, बेंगलूरू से अपनी पढ़ाई पूरी की, जहाँ उन्होंने क्रिकेट खेलते हुए कई कांच की खिड़कियां तोड़ी। बंगलौर में एम.ए. और एम.फिल पूरा करने के बाद उन्होंने लॉ कॉलेज यूनिवर्सिटी में पढ़ाना शुरू किया।

अपने स्कूल के वरिष्ठ नागेश के साथ, महंतेश ने 1997 में समर्थनम की स्थापना की जो भारत में नेत्रहीन, विकलांग और वंचित लोगों को सशक्त बनाने में मदद करता है। दो सदस्य दल अपने सपनों को साकार करने के काम में एक-दूसरे के पूरक थे। जबकि महंतेश दूरदर्शी थे, नागेश उन लक्ष्यों को कार्यान्वित करते थे। विकलांग लोगों के लिए एक उज्ज्वल भविष्य निर्माण करने का उन दोनों का साझा दृष्टिकोण, दिन-ब-दिन बड़ता गया और अब भारत के हर कोने तक पहुंच रहा है।

महंतेश समर्थनम के बारे में ऐसे बात करते हैं जैसे कोई माता-

CAVINKARE ABILITY

AWARD
FOR
EMINENCE

given to

Mahantesh G.K.

on the 3rd day of February 2018 in Chennai

in recognition of excellence achieved against all odds

A person with visual impairment, he triumphed over his odds
To make them his strengths... losing his vision at six months
He has fought discrimination from the time he can remember
Refused admission in schools on grounds of disability
His persistence finally led to his being condescendingly
Allowed to sit on the last bench
Learning solely by listening, he went on to solve
Mathematics problems orally
Eventually going on to complete M.Phil to boot
Not content with a job as a lecturer and being Captain
Of Indian Cricket Team for the Blind, he
Went on to establish Samarthanam
An organization that assists persons with disabilities
Live a life of dignity and contribute seamlessly to society
Providing free & accessible education to about 11000 children
And technical education to 9550 youth with disabilities
Samarthanam also aids in dry & E-waste management
Training and promoting about 100 artists in various dance forms,
Providing food free of cost to 50 government schools,
Giving shelter to 2567 distressed women with disabilities…
Today, not only enjoying a pan-Indian presence, but
Also centres in US & UK and a consultative status with the UN as well
Thus has Mahentesh charted out his dreams
To lead others with visual impairment and other disabilities,
To improve upon the quality of their lives
Continuing to work in various capacities,
Making it his life's mission to bring dignity to others
His is a story of true grit and determination

चलाता है। समर्थनम बेंगलुरु के 50 अलग-अलग सरकारी स्कूलों में बच्चों को मुफ्त भोजन प्रदान करता है। विकलांग व्यक्तियों के लिए पेशेवर प्रशिक्षण और कौशल विकास प्रदान करने के लिए एक समर्पित बुनियादी सुविधा भी है और वे इस तथ्य पर गर्व महसूस करते हैं कि इन कर्मचारियों में से लगभग 45% महिलाएं हैं। अब तक, समर्थनम ने करीब 9550 विकलांग युवाओं को प्रशिक्षित किया है और लगभग 1100 बच्चों को मुफ्त शिक्षा प्रदान की है। महंतेश बी-केर (B Care) के संस्थापक निदेशक भी हैं जो एड्स को रोकने और एच.आई.वी / एड्स से शिकार लोगों के पुनर्वास के लिए काम करता हैं।

महंतेश एक क्रिकेट प्रेमी भी है। समर्थनम की पहल, क्रिकेट एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड इन इंडिया (सी.ए.बी.आई) ने कई विश्व चैंपियनशिप जैसे 2012 और 2017 टी-20 विश्व कप, 2014 का एकदिवसीय विश्व चैंपियनशिप और 2016 के एशिया कप में भारत को पहुँचाया।

पिता अपने बच्चे के लिए बड़ा सपना देखते हुए बात करते हैं। 1997 में तीन अंधे छात्रों को पढ़ाते शुरू हुआ समर्थनम आज भारत के अलावा ब्रिटेन और अमेरिका में भी उपस्थित है। बेंगलुरु का विद्यालय न केवल नेत्रहीन विकलांगों के लिए शिक्षा और संसाधन प्रदान करता है, बल्कि महिलाएं जो हिंसा के शिकार हुए हों, के लिए बचाव घर भी

उनके सहयोगी कुमार महंतेश के व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए कहते हैं "महंतेश अंधे हो सकतेहैं, लेकिन उनका सपना न केवल अंधों के लिए बल्कि सभी विकलांगों के लिए समावेशी समाज का है । वे एक दूरदर्शी नेता हैं जो समय से आगे सोचते हैं और अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए सही रणनीतियों को अपनाते हैं।" ■

- हेमा विजय और श्रुति.एस.राघवन द्वारा व्यक्तित्व चित्रण

CavinKare

16 வகை
அனைத்தும் சிறந்த சுவை

உங்கள் உணவை மேலும் சிறப்பாக்க,
நாங்கள் ஆவக்காய், தொக்கு, எலுமிச்சம்,
பூண்டு, தக்காளி, இஞ்சி போன்ற 16
சிறந்த ஊறுகாய் வகைகள் தருகிறோம்.
அத்தனையும் ருசித்திடுங்கள்.

आख्यानों का संगम

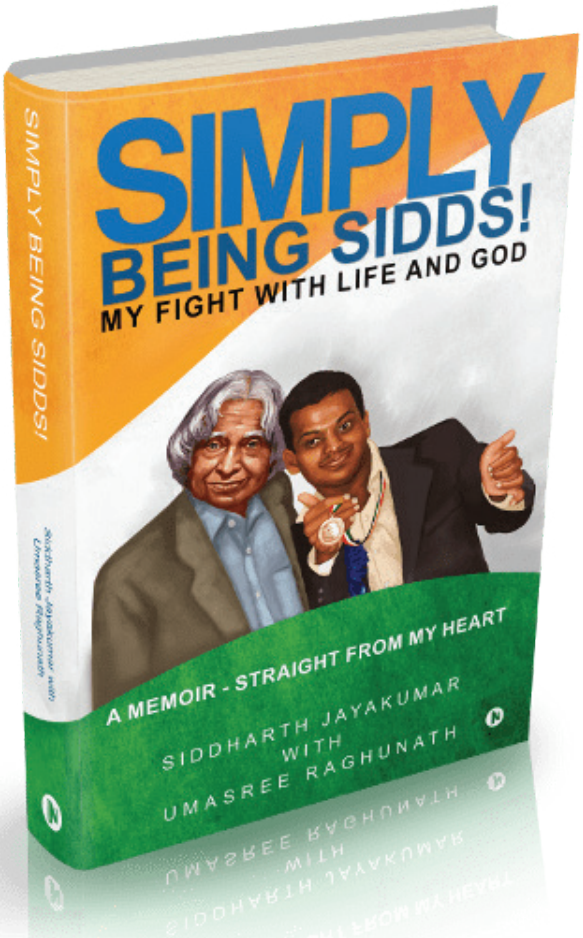

लेखकः सिद्धार्थ जयकुमार और उमाश्री रघुनाथ

प्रकाशक : नोशन प्रेस 2017

मूल्य : रु.249

'सिम्पली बीइंग सीड्स! मई फाइट विथ लाइफ एंड गॉड' - रोज़मर्रा के ज़िन्दगी से साहस और दृढ़ता के सबक, जो कि किसी भी स्थिति को बदल सकता है- पर एक व्यक्तिगत आख्यान है। यह विकलांगता से निपटने के बारे में एक व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करता है, हेमा विजय लिखती है।

हेमा विज

'सिम्पली बीइंग सीड्स! मई फाइट विथ लाइफ एंड गॉड' का आकर्षण, पाठक के ध्यान बनाए रखने के लिए जिस तरह विभिन्न आख्यानें एक जुट होते हैं, में हैं। यह सिद्धार्थ जयकुमार की आत्मकथा है , जिन्होंने सेरिब्रल पाल्सी से व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन प्रभावित होने नहीं दिया। यह पुस्तक पाठकों को सकारात्मक दृष्टिकोण से जीवन के चुनौतियों को सामना करने के लिए उत्साहित करती है।

उपाख्यानों और प्रतिबिंबों से भरे इस किताब के सह-लेखक, लेखक के मित्र उमाश्री रघुनाथ है। आख्यान में सिद्धार्थ के बारे में कहानियों को शामिल किया गया है, जिसे उनकी माँ कोमल जयकुमार, उनके शिक्षक और विद्यासागर, जहां उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा की थी, के उप निदेशक,दीप्ति भाटिया, ;

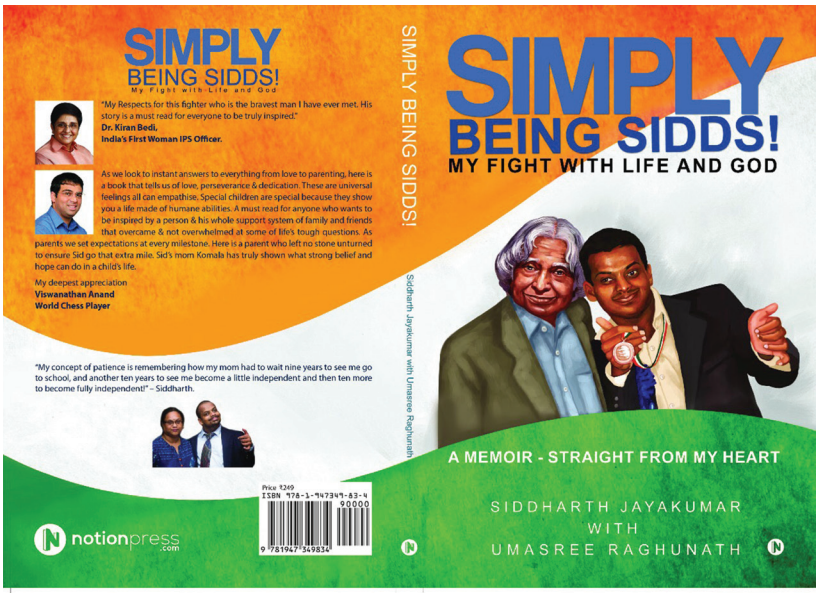

बास्टन मैट्रिक्यूलेशन हायर सेकेंडरी स्कूल ,जहां सिद्धार्थ ने मुख्यधारा में अपनी पढ़ाई पूरी की थी, के प्राध्यापक वसंत जयराम, उनके साला अमित कुमार रति, उनके दोस्त प्रसन्ना जैर; कई कॉर्पोरेट प्रमुख जिनके साथ उन्होंने काम किया - और मुख्यतः हमारे महान, प्यारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम, जिन्होंने सिद्धार्थ को इस पुस्तक को लिखने के लिए प्रेरित किया, ने बाँटा है। ये विभिन्न परिप्रेक्ष्य पाठकों को सिद्धार्थ के बारे में एक आकर्षक दृश्टिकोण लाते हैं। ए.आर.सुगांति मनोहरन और भाग्यश्री कुलकर्णी द्वारा फोटो और पेंसिल स्केचे ने पाठक को नायक और उनके जीवन के लोगों के बारे में करीब से जानकारी दी।

अपने जीवन के व्यक्तिगत, व्यावसायिक और दार्शनिक यात्रा के बारे में बताते हुए, सिद्धार्थ ने ऐसे मुद्दों पर प्रकाश डाला जिनको संबोधित करने की जरूरत है ताकि विकलांग व्यक्तियों को एक सामान अवसर प्राप्त हो। उदाहरण के लिए, अपनी उच्च माध्यमिक शिक्षा के बारे में लिखते हुए वो बताते हैं कि हालांकि उन्हें विज्ञानं में दिलचस्पी था, उन्हें मज़बूरन एकाउंट्स लेना पड़ा क्योंकि वह व्यावहारिक परीक्षाओं और आरेखों को संभाल नहीं सके। अन्य मुश्किलों में शामिल है , लिपिकों की उपलब्धता में कमी और विशेष स्कूलों से मुख्य धारा स्कूलों में शामिल होना । अपने अनुभवों का वर्णन करते हुए सिद्धार्थ, पाठकों को अपने शैक्षिक उपलब्धियों - कालेज की शिक्षा, नौकरी के लिए पहला साक्षात्कार, इंस्टीट्यूट ऑफ फाइनेंशियल सर्विसेज, यू.के. से एक सर्टिफाइड डाक्यूमेंट्री स्पेशलिस्ट (सीडीसीएस) के रूप में अर्हता प्राप्त करने वाले सेरेब्रल पाल्सी वाला पहला भारतीय, के बारे में बताते जिसके फलस्वरूप वित्तीय क्षेत्र में उनका करियर बना।

कही पर भी छिपने या बहाने बनाने का प्रयास नहीं है। सिद्धार्थ जीवन का डटकर सामना करते हैं। सेरिब्रल पाल्सी के अनुभव की वर्णना करते हुए वे इसे ' हमेशा सिहरने वाले शरीर से निपटने की ख़ुशी' कहते हैं। सेरिब्रल पाल्सी की चुनौतियों के बावजूद, वह अपने सपने और भय, उनकी ताकत और कमजोरियों, उनकी इच्छाओं और उम्मीदों की प्रकृति की सामान्य स्थिति को सामने लाता है। सिद्धार्थ जयकुमार बताते हैं कि अगर इन बच्चों को जीवन में सफल होने का उचित मौका दिया जाय तो सीपी से इतना घबराने की जरूरत नहीं है। विकलांग लोगों के संस्थानों, देखभालकर्ताओं, माता-पिता और दोस्तों के लिए, सिद्धार्थ की आत्मकथा यह घोषणा करती है, 'मैंने ऐसा किया, आप भी ऐसा कर सकते हैं!' अंत में, उनकी दृढ़ भावना और सकारात्मक दृष्टिकोण ... जो भी हो, जीवन का सामना करने के लिए चाहिए... सिद्धार्थ के जैसे । ■

सेरिब्रल पाल्सी की चुनौतियों के बावजूद, वह अपने सपने और भय, उनकी ताकत और कमजोरियों, उनकी इच्छाओं और उम्मीदों की प्रकृति की सामान्य स्थिति को सामने लाता सिद्धार्थ जयकुमार बताते हैं कि अगर इन बच्चों को जीवन में सफल होने का उचित मौका दिया जाय तो सीपी से इतना घबराने की जरूरत नहीं है। सिद्धार्थ जीवन का सामना डटकर करते हैं।

पगडंडी चलने के लिए ही हैं

मीरा बालाचंदर का पगडंडियों के हाल पर व्यंग पूर्वक लेखी

मीरा बालाचंदर

हो क्या रहा है? मेरे आँखों को रगड़ते हुए मैं दुबारा अच्छे से बने उस बोर्ड को देखती हूँ।

ज्ञान के उस पल के बाद से, चेन्नई की पगडंडी मेरी आँखें, मेरा जोश, मेरा जुनून बन गया है ... और ऐसे ही मैंने देखना शुरू किया कि वे न केवल कई आकार, आकृति , बनावट, ऊंचाई और गहराई में आते हैं, बल्कि बिल्ली की तरह उनका नौ उद्देश्यपूर्ण जीवन भी है!

मैरीन ड्राइव के अखंड पगडंडी में चलनेवाली मैं, चेन्नई के दो स्तरीय पगडंडी को देखकर चौंक गयी। यह सोचकर कि यह मोटापा कम करने में मदद करेगा, मैंने इसको भी स्वीकार किया। लेकिन एक दशक के बाद, जब मेरे घुटनों के दर्द के कारण जब मैं चेन्नई के पगडंडी को उठी हुई भौहें के साथ देखती हूँ तो मुझे संदेह होता है ।

पूर्वोक्त बोर्ड ने नए सिरे से अवलोकन के साथ पुन: 'क्यों' प्रश्न उत्पन्न किया।

कुछ पगडंडी शुरू में काफी चौड़े होते हैं और आगे जाकर पतला होने लगता है-एक स्त्री के 22" की

कमर या साइज 0 की तरह। कुछ सुन्दर रूप से रंग-समन्वित टाइल्स में आते हैं, तो कुछ ज़ेबरा बॉर्डर के साथ। कुछ बच्चे के गालों की तरह चिकनी होते हैं, और कोई असमतल।

क्या पगडंडी सिर्फ चलने के लिए ही है? हर 15 कदमों में बार-बार यह घोषणा है।शायद मंगल

ग्रह में ऐसा होगा!!हम जुगाड राष्ट्र हैं, आविष्कारशीलता और उपयोगिता के नशे में। मोची जो, कुछ घंटों पहले तक गुमनाम, अचानक पगडंडी पर अपने लिए एक तम्बू बना लेता है, हमारी दीवार और एक विद्युत खंभा को प्लास्टिक शीट और तार से जोड़कर।वहां पर वो राज करता है, वहीँ सोता है, एक दर्जन से अधिक जूते प्रदर्शित करता है और लोगों को आकर्षित करता है, जबकि हम पगडंडी से उतरकर यातायात में विलीन हो जाते हैं।बेल्ट विक्रेता, फलों के विक्रेता, फूल विक्रेता, पौधे नर्सरी, चाय की दुकान, सभी को पगडंडी पर एक जगह मिलती है ... सिर्फ सूरज के नीचे सही जगह और इन बातों को नज़रअंदाज़ करनेवाले पुलिस की जरूरत है, और लो! आप 'भारत में बेच सकते हैं'।

एक व्यस्त बस स्टॉप के पास, रुमाल विक्रेता ने अपना पूरा माल पूरे पगडंडी पर फैला दिया, और पास के पेड़ पर भी बाकी रुमाल लटका दिया। जैसा कि मैं इस गतिरोध पर पहुंची, मैं रुख गयी और विक्रेता के आँखों की गहराई को देखकर इस उम्मीद से कि पगडंडी खुद-ब-खुद खली हो जायेगा, मंत्र के जैसे घोषणा करती, " पगडंडी चलने के लिए ही हैं"।लेकिन नहीं.वह आदमी इस अशुभता पर आँख झपकाता है और मैं उसे अपने माल को थोड़ा अंदर खींचने के लिए कहती हूँ ताकि चलने के लिए पगडंडी पर मुझे जगह मिले । उसे लगता है कि सड़क का किनारा बेहतर प्रदर्शनी जगह है। फिर वह मेरे जिद्दी आज्ञा के के कारण अपना माल आधा इंच हटाता है और जैसे ही मैं उस पार जाती हूँ उसका माल वापस उसी जगह रख देता है।

और फिर अचानक, गतिविधि के हड़बड़ी में, एक तूफानी-जल निकास पगडंडी के समानांतर बनाया गया है। उसके ऊपर लाल रंग की चमचमाती टाइल्स लगायी जाई और लो!! सुरुचिपूर्ण वक्र में समाप्त होने वाला प्रोमेनेड बन गया! रुमाल विक्रेता जो मेरा दोस्त बन

गया ने घोषणा किया कि यह पगडंडी मेरे लिए बनाया गया है!सच में इस लाल दरी पर इत्मीनान से टहलने के लिए एक प्रसन्नता है, जबकि कुछ ही फुट के दूरी में दुनिया यातायात के कारण पागल हो रहा है!

पर यह बीती हुयी बात है। आज नया और पुराना पगडंडी दोनों ही गहरे संकट में है। या उच्च दुख में। खोदी हुयी मिट्टी का ढेर पहाड़ की तरह ढक रहा है। विक्रेता निराश हैं। अब वहां बस स्टॉप नहीं है।दो भूरे रंग के कुत्ते एक दूसरे को मिट्टी के ढेर पर खुशी से पीछा करते हैं। खूब व्यस्त राजमार्ग पर चलते समय उनकी चपलता देखकर मुझे ईर्ष्या होती है और आश्चर्य लगता है कि आज तक पीछे से उनपर कोई गाडी टकराई नहीं।

भोजनालय पगडंडी पर आराम से खुद को बढ़ाते हैं, चेन्नई के भूखे लोगों को ड्राइव-इन सुविधाएं प्रदान करते हैं जबकि हम पैदल चलने वालों को पगडंडी से नीचे उतरकर सड़कों पर चलना पड़ता है।एक अकेला गणेश, पगडंडी के चौराहे पर , बाजू के 'आसिफॅ बिरियानी' के स्वादिष्ट महक को सूँघते हैं, जिसकी तैयार खाने के डब्बापगडंडी पर राखी गयी हो।कोई पशु या कुत्ते व्यर्थ

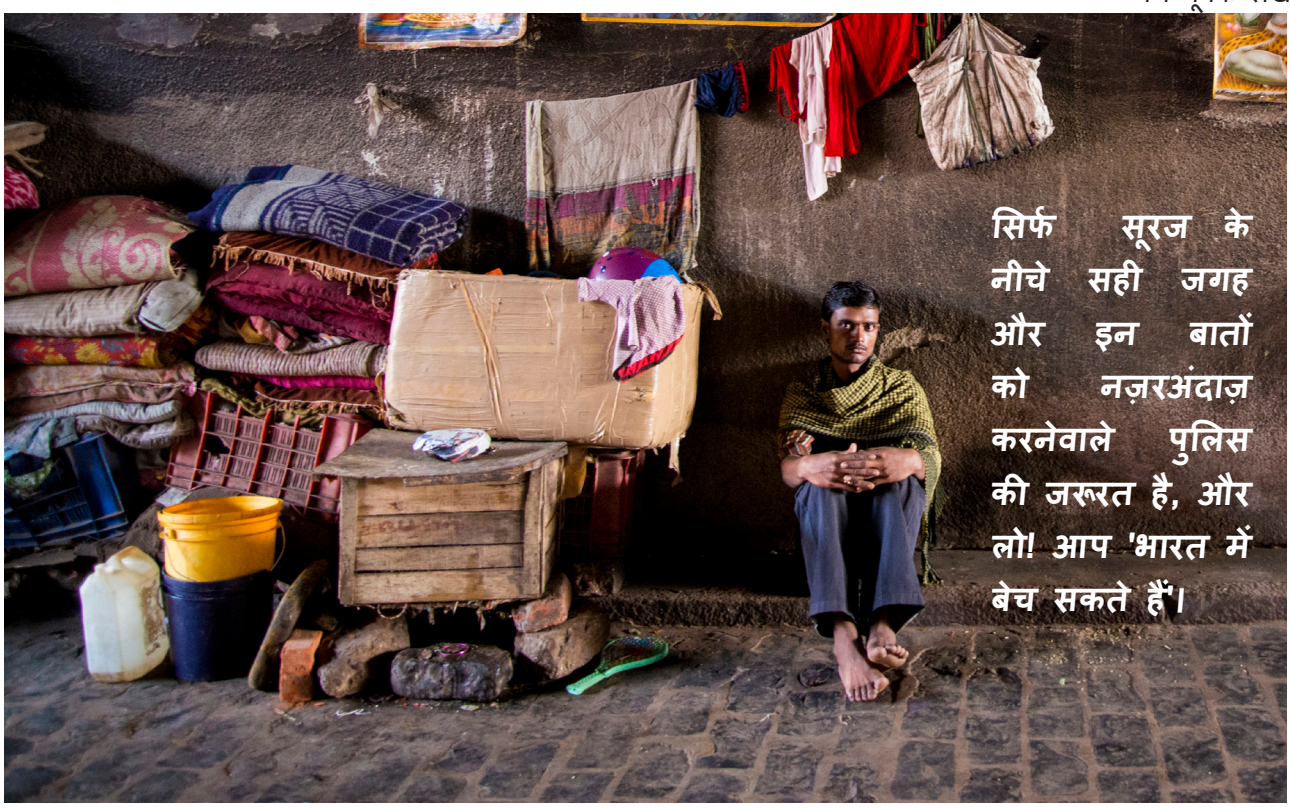

भोजन को नहीं चाहते, जो थाली पर छोड़ दिया जाता है, जब कुछ ही दूर पर कचरेदान सुस्वाद चीज़ों से भरा पड़ा है! इसे सड़क पर लुढ़कने से भरपूर खाना मिलेगा! चतुर पशु जो मेरे पास चल रही है इसमें बहुत ही प्रतिभाशाली है। वह जानती है कि कौन सा कचरेदान में सबसे अच्छा खाना मिलेगा और सीधे उसकी ओर जाता है। अपने कृतज्ञता प्रतीक करने के लिए पगडंडी पर वह कचरा का एक ढेर छोड़ जाती है!

बड़े / छोटे राजनैतिक नेता के शादी या जन्मदिन की घोषणा का होर्डिंग अचानकपगडंडी पर खड़े होते हैं। कभी ये होर्डिंग हमे इनके नीचे झुककर जाने के लिए - जो हमारे रीढ़ की हड्डी के अनुकूल हो सकती है- विवश करते हैं तो और कभी हमे आगामी यातायात का सामना करना पड़ता है।

मैंने देखा है कि पेड़ पगडंडी पर अच्छे से उगते हैं, जंक्शन बॉक्स जिनमे यौन समस्याओं और बवासीर के लिए जादू औषधि के वादें हैं, पगडंडी पर आराम से खड़े हैं। 'पंक्चर दुकान' ने पगडंडी पर टायरों के ढेर और बिखरे उपकरणों के साथ सड़क को छिद्र कर दिया है।

छोटे मुरुगन और उनके भाई शक्तिवेल का जन्म और पालन-पोषण पगडंडी पर ही हुआ। जबकि पगडंडी को अपना घर मानकर उनकी माँ ईंट और टहनियाँ के चूल्हे पर एक काले पात्र में खाना बनाती है, उनके शराबी पिता पास में ही लापरवाही से पडा है, और बच्चे नंगेपन की विभिन्न स्थिति में घूमते हैं। पगडंडी पर एक छोटी सी प्लास्टिक की गुड़िया पड़ी है। कुछ दिनों परिवार की धुलाई, पूरे पगडंडी को आक्रमित करती है, तो कभी धुले हुए कपड़े पेड़ों से लटकती है। जल्द ही वैज्ञानिकों यह घोषित करने वाले हैं कि बच्चों द्वारा निगला हुआ स्वाभाविक प्रोबायोटिक्स, मुफ्त में प्राप्त विटामिन डी की खुराक, और परिवार की तनाव मुक्त जीवन शैली उनके गोल गाल, हंसमुख चहरे और उनके ख़ुशी का कारण है!

व्यस्त समय में जब मैं बस में बैठी पगडंडी की ओर नज़र डालती हूँ, तब मैं पाती हूँ कि जबकि हम यातायात में फसें है, दो पहिया वाहन में लोग पगडंडी पर चढ़कर पैदल चलने वालों लोगों को डराते हुए मुख्यधारा यातायात में शामिल हो जाते हैं।

और कहा जाता है 'पगडंडी चलने के लिए ही हैं' मेरे ख्याल से इस पारिस्थितिक तंत्र को बंद करने की ज़रुरत नहीं, बल्कि बोर्डों को अलग ढंग से व्याख करने की आवश्यकता है ।सिर्फ 'पूरा रास्ता आपका' काफी है । वैसे भी कौन पढ़ता है? बोर्ड और खम्भे को और एक दूसरे संपन्न दिमाग के लिए छोड़ दें! ■

MOST PEOPLE DON'T REALISE THAT PUMPS ARE EVERYWHERE

R.NO. 66062/96

Grundfos is committed to meeting the global energy challenge with the market's most efficient pumps.

For more information contact us:

salesindia@grundfos.com, serviceindia@grundfos.com

1800-345-4555 (Toll Free), in.grundfos.com, GrundfosIND, @GrundfosIND

be
think
innovate

GRUNDFOS